



SMT. SARITA JOSHI

Smt. Sarita Joshi is an award-winning stage, television, and film actress who has been working for over six decades now. She has performed over 15,000 shows in Gujarati, Marathi, Hindi, and Marwari in India and all over the world over the course of her career, theatres today fill up with her name on the marquee.

2. Born on 17th October, 1941 in Pune, Maharashtra, Smt. Joshi Bhonsle had an early exposure to professional theatre in Gujarati. Beginning at the age of seven, she performed traditional theatre with the New Laxmikant Company of Baroda and the Khatau Alfred Theatrical Company. She learnt dancing as a child, performed dance ballets professionally, and learnt the Indian dance forms Bharatnatyam from Nana Kasar and Kathak from Gauri Shankar.

3. In 1957, Smt. Joshi graduated to lead roles and began working with Kanhaiyalal Munshi, founder of Bharati Vidya Bhavan Kalakendra, and moved on to the Indian National Theatre in 1964 with her husband, acclaimed actor-director Pravin Joshi, and continued on till 1982. She founded Pravin Joshi Theatre, named after her late husband in 1983, where she directed and staged 11 successful plays, including the one-woman autobiographical show Jhalak which is still performed today by her. During the 1980s, she also acted in several Gujarati and Hindi films.

4. In the course of an active career on stage, Smt. Joshi has acted in some 150+ plays, several of them colossal successes where her iconic characters are remembered and appreciated by audiences even now. Among these are Balwant ni Baby directed by Adi Marzban, Saptapadi, Mausam Chalke, both enacted by the husband-wife team of Pravin and Sarita, Savita Damodar Paranjpe directed by Siddharth Randheria, and Santu Rangili directed by Pravin - a Gujarati adaptation of Shaw's Pygmalion which ran to over 1,000 shows.

5. Smt. Joshi continues to perform the one-woman Hindi play Sakubai, written and directed by Nadira Babbar, both nationally and internationally from 2000. She has a prolific career in television serials but is often remembered as 'Baa' from the former beloved TV serial Baa Bahoo Aur Baby for which she has won the Favourite Actor by Star Pariwar for four years consecutively from 2005 to 2008, as well as the Indian Television Academy award for Best Actress in a Drama in 2007. She acted in the Hindi films Guru (2007), Dasvidaniya (2008) and Simmba (2018). She played the title character in Gangoobai (2013) and won the Best Actress award at the Washington DC South Asian Film Festival for her performance.

6. Over the years, Smt. Joshi has been honoured with numerous awards and tributes. As an actress in Gujarati films, she has received three awards from the Government of Gujarat; as a stage actress she was honoured by Akhil Marathi Natya Parishad in 1984. She received the Sangeet Natak Akademi Award for her contribution to theatre as an actress in 1988. Prominent amongst them are the Maharashtra Gaurav Puraskar in 1990, the Utkrusht Puraskar by The Bank of India in 1998 and a gold medal by the Mumbai Nagar Palika. In 2017, she was felicitated by Morari Bapu with the Natraj Award and was honoured with the Harinda Dave Memorial Award and the Nalanda Bharata Muni Samman last year.





श्रीमती सरिता जोशी

श्रीमती सरिता जोशी एक पुरस्कार विजेता मंच, टेलीविजन और फिल्म अभिनेत्री हैं जो छह दशक से भी अधिक समय से सक्रिय हैं। उन्होंने अपने कला जीवन के दौरान, भारत और पूरी दुनिया में गुजराती, मराठी, हिंदी और मारवाड़ी में 15,000 से ज्यादा शो किए हैं।

2. 17 अक्टूबर, 1941 को पुणे, महाराष्ट्र में जन्मी श्रीमती जोशी कम उम्र में ही गुजराती पेशेवर थिएटर से जुड़ गईं। उन्होंने 7 वर्ष की आयु में ही बड़ौदा की न्यू लक्ष्मीकांत कंपनी और खटाऊ अल्फ्रेड थिएट्रिकल कंपनी में पारंपरिक थिएटर में प्रदर्शन करना आरंभ किया। उन्होंने बचपन में ही नृत्य सीख लिया और पेशेवर तौर पर बैले नृत्य प्रदर्शन किया। उन्होंने नाना कासर से भरतनाट्यम और गौरी शंकर से कत्थक नृत्य सीखा।

3. 1957 में श्रीमती जोशी ने मुख्य भूमिकाएं करना शुरू किया और भारतीय विद्या भवन कला केंद्र के संस्थापक, कन्हैयालाल मुंशी के साथ कार्य करना शुरू किया। वह 1964 में अपने प्रसिद्ध अभिनेता–निर्देशक पति प्रवीण जोशी के साथ इंडियन नेशनल थियेटर में आ गईं और 1982 तक वहां कार्य करती रहीं। उन्होंने 1983 में अपने स्वर्गीय पति के नाम पर प्रवीण जोशी थिएटर की स्थापना की, जहां उन्होंने 11 सफल नाटकों का निर्देशन और मंचन किया। इनमें एकल महिला का आत्मकथात्मक शो 'झलक' शामिल है, जिसका आज भी मंचन किया जाता है। 1980 के दशक के दौरान उन्होंने अनेक गुजराती और हिंदी फिल्मों में भी अभिनय किया।

4. एक सक्रिय स्टेज करियर के दौरान, श्रीमती जोशी ने 150 से ज्यादा नाटकों में अभिनय किया है। उनमें से अनेक को महान सफलता मिली और आज भी दर्शक उनके मशहूर किरदारों को याद करते हैं और उनकी सराहना करते हैं। इनमें आदी मर्जबान द्वारा निर्देशित 'बलवंत नी बेबी'; 'सप्तपदी' और 'मौसम छलके'; प्रवीण और सरिता की पति–पत्नी की जोड़ी द्वारा अभिनीत सिद्धार्थ रणधेरिया द्वारा निर्देशित 'सविता दामोदर परांजपे' तथा प्रवीण द्वारा निर्देशित शॉ के पिग्मेलियन के गुजराती रूपांतरण 'संतु रंगीली' शामिल हैं, जिनके 1000 से ज्यादा शो किए गए।

5. श्रीमती जोशी वर्ष 2000 से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, नादिरा बब्बर द्वारा लिखित और निर्देशित एकल महिला हिंदी नाटक सकूबाई में अभिनय कर रही हैं। उन्होंने टेलीविजन धारावाहिकों में लंबे समय तक काम किया है परंतु उन्हें बेहद पसंद किए गए टीवी धारावाहिक 'बा बहू और बेबी' की 'बा' के रूप में अक्सर याद किया जाता है। इसके लिए उन्होंने 2005 से 2008 तक लगातार 4 वर्षों तक स्टार परिवार का पसंदीदा अभिनेत्री का पुरस्कार और 2007 में ड्रामा में सर्वोत्तम अभिनेत्री का इंडियन टेलिविजन एकेडमी पुरस्कार भी जीता है। उन्होंने हिंदी फिल्मों गुरु (2007); दसविदानिया (2008) और सिम्बा (2018) में अभिनय किया। उन्होंने गंगूबाई (2013) में शीर्षक चरित्र निभाया और अपने प्रदर्शन के लिए वाशिंगटन डीसी साउथ एशियन फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार जीता।

6. इन वर्षों में, श्रीमती जोशी को कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। गुजराती फिल्मों की अभिनेत्री के रूप में, उन्हें गुजरात सरकार की ओर से तीन पुरस्कार मिले हैं। अखिल मराठी नाट्य परिषद द्वारा 1984 में, उन्हें एक मंच अभिनेत्री के रूप में सम्मानित किया गया। उन्हें 1988 में अभिनेत्री के तौर पर, रंगमंच में उनके योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। उन्हें प्रदान किए गए सम्मानों में 1990 में महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार; 1998 में बैंक ऑफ इंडिया द्वारा उत्कृष्ट पुरस्कार और मुंबई नगर पालिका द्वारा स्वर्ण पदक प्रमुख हैं। 2017 में, उन्हें मोरारी बापू द्वारा नटराज पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और पिछले वर्ष हरिन्दा दवे मेमोरियल अवार्ड तथा नालंदा भरत मुनि सम्मान प्रदान किया गया था।